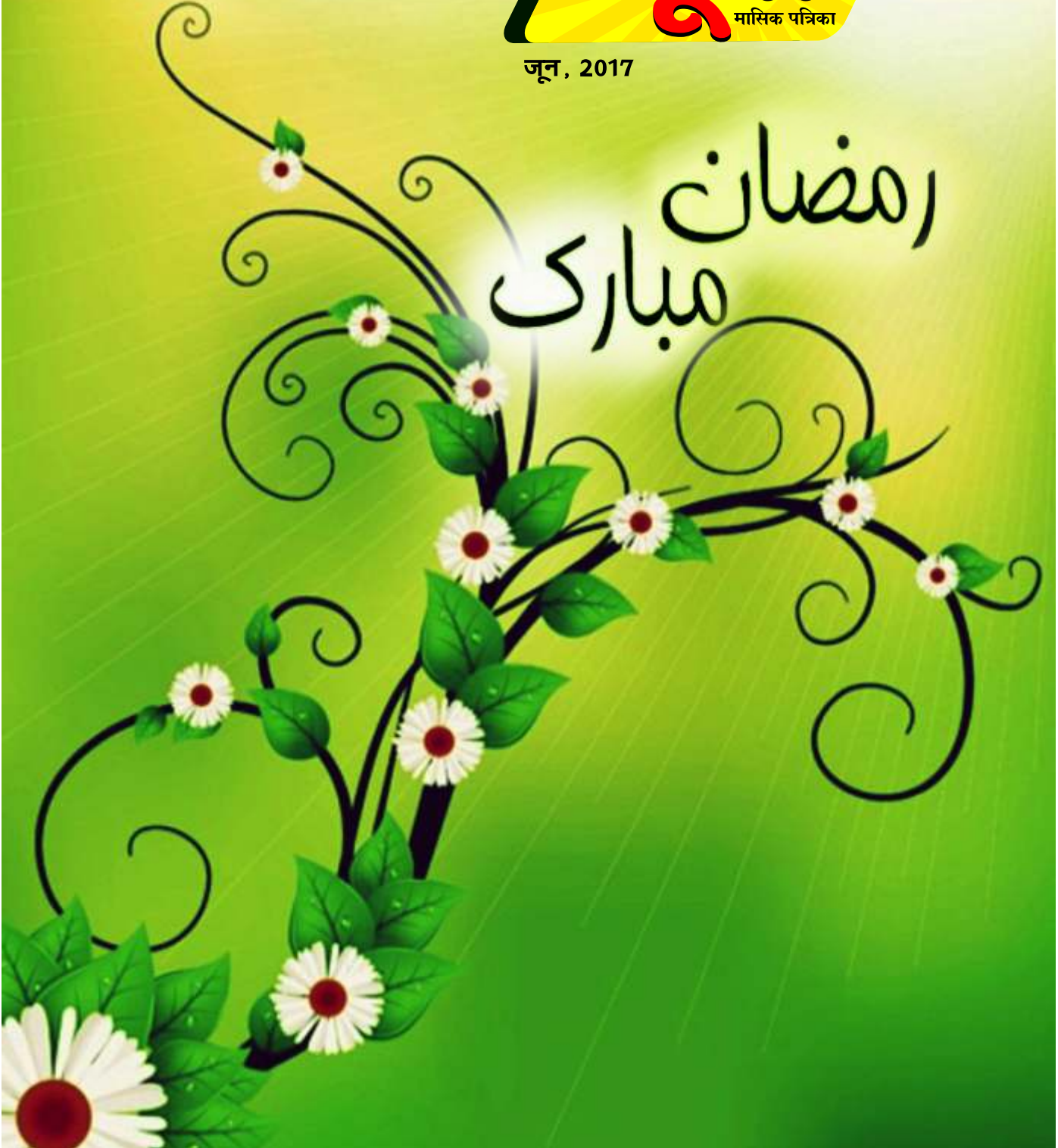




जून, 2017

رمضان
مبارک



اِنَّ الْمُسْلِمِينَ مَصْبَاغُ الْهُدٰى وَ سَخِيْنَةُ النَّبَاةِ



سہ ماہی مصباح الہدی

تعمیری افکار ★ مدلل گفتگو
تحقیقی انداز ★ شگفتہ بیان
فرمودات قرآن اور تعلیمات اہل بیت
پر مشتمل مضامین پڑھنے کے لئے
مصباح (اردو) اردو کے ممبر بنئے۔

سہ ماہی **مصباح الہدی** (اردو) کے ممبر بنئے

رجسٹرڈ ڈاک سے: ۳۰۰ روپیہ

سالانہ: ۲۰۰ روپیہ

قیمت فی شمارہ: ۲۰ روپیہ

مدیر اعلیٰ: سید منظر صادق زیدی | مدیر: سید محمد ثقلین جو راسی | نائب مدیر: وقار حیدر اعظمی

نئی نسل
خاس تौर पर
जवानों के लिए
हुदा मिशन की
हिन्दी ज़बान में
ख़ास पेशकश



दोमाही मिस्वाहुल हुदा

दोमाही “मिस्वाहुल हुदा” (हिन्दी) आज ही मेम्बर बनिये और साथियों को भी बनाईये।

प्रति मैगज़ीन: 40/रुपये

सालाना: 200/रुपये

रजिस्टर्ड डाक से: 300/रुपये

मुख्य संपादक: मंज़र सादिक जैदी | संपादक: तसदीक हुसैन रिज़वी

सहायक: कुमैल असगर जैदी, अली अमीर रिज़वी

Huda Mission

Office : Shafaat Market
Zehra Colony, Muftiganj, Lucknow

हुदी مشن

آفس: شفاعت مارکیٹ زہرا کالونی، مفتی گنج لکھنؤ

Mob: +91-9415090034, 9451085885, 9389830801, 9936193817



اَلسَّلَامُ عَلَیْكُمْ

اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوبٰی لَهُمْ وَحُسْنُ مَاۢبٍ
(عدد ۳۹)



जून, 2017 जिल्द-7, शुमारा-7

यादगार:

मौलाना मोहम्मद अली आसिफ ताबा सराह

एडिटोरियल बोर्ड:

मौलाना तसदीक हुसैन साहब, मौलाना सईदुल हसन साहब

मौलाना कुमैल असगर साहब

एडिटर:

सय्यद मंजर सादिक जैदी

सब एडिटर:

सय्यद मो0 सिब्लैन बाकरी

आर्ट एवं डिजाईन:

imagine

We Fix Imagination

9839099435

Annual Subscription
only Rs. 300/-

Published by:

Huda Mission

Head Off.: Vill. Ghazipur, P.O. Gogwan,
Distt. Muzaffarnagar, U.P. India

Lucknow Office: Shafaat Market
Zahra Colony, Muftiganj, Lucknow-3 (U.P.) INDIA
Mob.: 9415090034, 9451085885

E-mail: tubamonthly@gmail.com

फेहरिस्त

1. जन्नत की खिड़की
2. कुआनी कवीज़
3. इक्तालीसवां सबक
4. अमीरुल मोमिनीन और
ईसाई बच्ची
5. अपनी नींद इबादत बनाएं!
6. 21 खज़ूरें
7. अश्शफ़ियों की थैली
8. माहे रमज़ान की बहार
9. जाबिर इब्ने हय्यान





प्यारे बच्चो!

हमने आपके लिए दिलचस्प सिलसिला शुरू किया है। इस QUIZ को खुद हल करने की कोशिश करें। इस क्वीज़ को हल करने से जहाँ तुम्हारी मालूमात में इज़ाफ़ा होगा वहीं कुआनी की तिलावत का सवाब भी मिलेगा। अपने जवाबत “तूबा” के दफ़्तर रवाना करें। आप अपने जवाब ई-मेल व SMS के ज़रिये भी भेज सकते हैं। सही जवाब देने वालों को इनाम दिया जाएगा।

SMS On

09415090034, 09890500072, 09451084885

E-mail: tubamonthly@gmail.com

- कुआनी के किस सूरे में खुदा वन्द ने सितारों के बिखरने की खबर दी है?
☐ (1) सूरे इन्फ़ेतार ☐ (2) सूरे लैल
☐ (3) सूरे फ़ज़ ☐ (4) सूरे कुरैश
- “शबे कद्र हजार रातों से बेहतर है” का ज़िक्र किस सूरे में आया है?
☐ (1) सूरे फ़लक ☐ (2) सूरे तीन
☐ (3) सूरे नस्र ☐ (4) सूरे कद्र
- सूरे तारिक में अल्लाह ने “तारिक” किस चीज़ को कहा है?
☐ (1) दलील ☐ (2) बहुत से सितारों को
☐ (3) चमकते हुए सितारे को ☐ (4) चमकते हुए चाँद को
- “जब आसमान फट जाएगा” किस सूरे की कौनसी आयत है?
☐ (1) सूरे फ़ज़र पच्चीसवीं आयत ☐ (2) सूरे आला पहली आयत
☐ (3) सूरे मसद दूसरी आयत ☐ (4) सूरे इन्शेकाक पहली आयत
- सूरे “इख़्लास” कुआनी का कौन सा सूरा है?
☐ (1) 95 ☐ (2) 110 ☐ (3) 96 ☐ (4) 112
- सूरे “नास” कुआनी का कौन सा सूरा है और इस में कितनी आयतें हैं?
☐ (1) 115,5 ☐ (2) 110,3 ☐ (3) 114,6 ☐ (4) 108,3
- खुदा ने किस सूरे में शम्स वाले शहर की कसम खायी है?
☐ (1) सूरे इन्शेकाक ☐ (2) सूरे तीन
☐ (3) सूरे तारिक ☐ (4) सूरे शम्स
- “जब दरया भड़क उठेंगे” किस सूरे की कौनसी आयत है?
☐ (1) सूरे तक्वीर छठी आयत ☐ (2) सूरे आला पहली आयत
☐ (3) सूरे मसद दूसरी आयत ☐ (4) सूरे इन्शेकाक पहली आयत



सामने वाली तस्वीर को देखकर रंग भरो





مشکلات اور برائیوں کی وجہ

मुश्किलात और बुराईयों की वजह

وَمَا أَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَفْسِكَ

نساء: ۷۹

نيسا-79



اور تم تک جو بھی برائی پہنچی ہے وہ خود تمہاری طرف سے ہے

और तुम तक जो भी बुराई पहुँची है वो खुद तुम्हारी तरफ से है





امیر المومنین اور عیسیٰ مچی

امیر المومنین امیر المومنین ہجرت اہل اہل کو بچوں سے بہت مہربان تھی۔ وہ بچوں کے ساتھ وقت گزارتے، انہیں پیار کرتے اور انہیں کھانے-پینے کی چیزیں لاکر دیتے تھے۔ گریب اور یتیم بچے مولانا امیر المومنین سے بہت آس رکھتے تھے۔ کیونکہ وہ انہیں باپ کی کمی محسوس نہیں ہونے دیتے تھے۔ وہ بچوں کے ساتھ کھلتے بھی تھے۔

شہر میں ایک عیسیٰ مچی بھی اپنے ماں-باپ کے ساتھ رہتی تھی۔ وہ اپنے ماں-باپ کی اکیلی بیٹی تھی۔ اسی لیے

اسکے ماں-باپ اسے بہت پیار کرتے تھے۔ وہ چار یا پانچ سال کی تھی کہ اسکے باپ کا انتقال ہو گیا۔ اب اسکے پاس کوئی سہارا نہیں تھا اور وہ بالکل ناامید ہو گئی تھی۔ مچی بھری تھی۔ جب وہ بہت پریشان ہو گئی تو اس نے اپنی ماں سے کہا: امما کچھ کھانے کو دے دے، مجھے بہت بھری لگی ہے۔

اسکی ماں نے ایک پتیلی میں پانی ڈالا اور اس سے کہا: "بھٹا کھانا ابھی پک جائیگا، بس تھوڑی دیر صبر کر لو۔"

बच्ची ने कहा: "अम्मा और कितनी देर सब्र करुं? मुझे बहुत भूख लगी है।"

माँ की समझ में नहीं आ रहा था कि वह इसको क्या जवाब दे, क्योंकि घर में खाने को कुछ भी नहीं था और माँ ने पत्तीली में खाली पानी डाल कर रख दिया था ताकि बच्ची का दिल बहला रहे।

अभी वह यह सोच ही रही थी कि दरवाज़े पर दस्तक हुई। माँ ने दरवाज़ा खोला तो देखा कि अमीरुल मोमिनीन अली अ० खड़े हैं। वह उन्हें देखकर बहुत हैरान हुई और अन्दर आने को कहा। हज़रत अली अ० उनके लिए खाने का सामान लाए थे।

आप अ० ने औरत से खाना पकाने को कहा और खुद बच्ची के साथ खेलने लगे। आप अ० ने उसके साथ खूब खेला, बातें कीं और यहाँ तक कि बच्ची को अपने ऊपर सवारी भी कराई। खाना तैयार हो गया तो बच्ची ने खुश होकर खाया।

अब हज़रत अली अ० उनके लिए रोज़ाना खाना भेजने लगे। एक दिन मौला अली अ० दरवाज़े पर नहीं आए तो बच्ची और उसकी माँ बहुत परेशान हो गई कि ऐसा तो कभी नहीं हुआ कि हज़रत अमीरुल मोमिनीन अ० ने उनके लिए खाना न भेजा हो या खुद न आए हों। अभी वह इसी कशमकश में थीं कि मुनादी ने आवाज़ दी कि मौला अली अ०

को मस्जिद में नमाज़ के दौरान ज़रबत लगी है।

बच्ची की समझ में यह बात नहीं आई और वह माँ से पूछने लगी कि मौला कब आएंगे।

माँ ने कहा: "बेटा वह आज नहीं आएंगे। उन्हें ज़ालिमों ने ज़ख्मी कर दिया है।"

बच्ची ने पूछा कि अब क्या करें तो माँ बोली: "चलो, मौला के पास चलते हैं।"

बच्ची फ़ौरन कमरे के अन्दर गई और एक कटोरा उठा कर उसमें मौला अली अ० के लिए दूध निकाल कर अपने साथ ले लिया। जब दोनों माँ बेटी उनके घर पहुँचें, तो देखा कि लोग मातम करते हुए घर से बाहर निकल रहे हैं और कह रहे हैं:

"हाय! आज हम यतीम हो गए, हमारे मौला दुनिया से रुख़सत हो गए।"

बच्ची ने यह सुना तो दूध का प्याला उसके हाथ से छूट कर गिर गया और फूट-फूट कर रोने लगी। उसे मौला अली अ० बहुत याद आ रहे थे। वह उनसे बहुत मानूस हो चुकी थी।

बच्चों! आपको पता है कि वह ईसाई बच्ची बड़ी हो कर क्या बनी? वह बड़ी हुई तो उसने इस्लाम को कुबूल कर लिया और अलवी कहलाई। अलवी उन लोगों को कहते हैं जो मौला अली अ० से बहुत मुहब्बत करते हैं।



अपनी नींद इबादत बनाएं!

प्यारे बच्चों! अस्सालाम अलैकुम (सलाम का जवाब दे दें) उम्मीद है कि आप सब खैरियत से होंगे। आज मैं आप के लिए "सोने" से पहले करने के लिए कुछ आमाल ले कर हाज़िर हुआ हूँ जो दिखने में तो आपकी तरह नन्हें, मुन्ने, छोटे और प्यारे-प्यारे हैं मगर उनका सवाब बहुत ज़्यादा है। आप लोग दिन या रात में जब भी सोएँ तो यह अमाल ज़रूर करें।

1. रसूले अकरम स०व० फ़रमाते हैं कि "जो सोने से पहले (सूरए तकासुर) पढ़ेगा, अल्लाह उसे क़ब्र के अज़ाब से महफूज़ रखेगा।"

कितना आसान काम है बच्चों! यह बहुत छोटा सा सूरह है जो कुर्आन मजीद के 30वें पारे में है, आप आसानी से याद कर सकते हैं। ज़बानी पढ़ें मगर इमाम जाफ़र सादिक़ अ० फ़रमाते हैं कि "कुर्आन से देख कर पढ़ने का सवाब ज़्यादा है।"

2. नबी करीम स०व० ने फ़रमाया है कि "जो कोई सोने से पहले बिस्मिल्लाहिर रहमान् रहीम पढ़ ले तो अल्लाह फ़रिश्तों से फ़रमाता है, ऐ फ़रिश्तों! सुबह (उसके जागने तक) उसकी साँसों के बराबर नेकियां लिखते रहो।"

प्याने बच्चों! एक सेहतमंद अगर 8 घंटे सोता है तो वह नींद के दौरान भी सैकड़ों बार साँस लेता है। इसलिए हमें चाहिए कि इस अमल से भी ज़रूर फ़ायदा उठायें और अपनी साँसों भी नेक बनाएँ।

3. रवायत में यह भी मिलता है कि वजू की

हालत में सोना बहुत सवाब रखता है। जैसा कि हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ अ० फ़रमाते हैं कि "जो शख्स वजू करके सोए, तो वह जितनी देर सोया रहेगा, उसका बिस्तर मस्जिद की तरह इबादतगाह है। यानी उसे नींद के बराबर इबादत का सवाब मिलेगा।"

4. "अगर जाड़े का मौसम हो या वजू करने में कोई परेशानी हो तो रवायत में यह भी मिलता है कि सोते वक़्त बीबी फ़ातिमा ज़हरा स० की तसबीह पढ़ने वाले को भी सारी नींद में भी इबादत का सवाब मिलता रहेगा।"

यह तो आप जानते ही होंगे बच्चों की 34 बार अल्लाहो अकबर, 33 बार अलहम्दुल्लाह और 33 बार सुबहानल्लाह पढ़ने को तसबीह फ़ातिमा ज़हरा स० कहते हैं।

5. अगर आप नींद का सवाब एक हज़ार रकअत नमाज़ पढ़ने के बराबर चाहते हैं तो जब भी सोएँ तो यह दुआ तीन बार पढ़ लिया करें:

"यफ़अलुल्लाहो मा यशाओ बे कुदरतेही व यहकुमो मा युरिदो बेइज़्ज़तेही।"

अल्लाह आपको 1000 रकअत का सवाब अता फ़रमा देगा।

दुआ है कि खुदा हमें मासूमीन की तालीमात पर खुलूस के साथ अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, (आमीन)। क्योंकि हमारे अमालनामों में जितनी ज़्यादा नेकियाँ होंगी उन्हें देखकर इमाम-ए-ज़माना उतने ही खुश होंगे।



21 खजूरें

रसूले खुदा स0व0 अपने असहाब के साथ बैठे थे कि एक लड़का आता दिखाई दिया सब लोग उसको देखने लगे कि उस लड़के को पैग़म्बर स0व0 से क्या काम हो सकता है वह लड़का करीब आया और कहने लगा।

मेरे वालिद का इन्तेक़ाल हो गया है और मैं एक यतीम बच्चा हूँ मेरे साथ मेरी माँ और एक बहन भी है हम लोग बहुत ग़रीब और बेकस हैं ऐ खुदा के रसूल स0व0 हमें कुछ खाने के लिये दे दीजिये।

यह सब कहने के बाद उसने हज़रत मुहम्मद स0व0 के लिये दुआ की पैग़म्बर स0व0 भी बचपन में यतीम हो गये थे आपके वालिद का तो आपकी वालिदा से पहले ही इन्तेक़ाल हो गया था उसके बाद वालिदा और फिर दादा का भी इन्तेक़ाल हो गया उस वक़्त आपकी उमर आठ साल थी उसके बाद से आपके चचा और हज़रत अली अ0स0 के वालिदे माजिद हज़रत अबुतालिब अ0स0 ने आपकी परवरिश की लेकिन आप अपनी विलादत से पहले ही वालिद जैसी शफ़ीक़ हस्ती से महरूम हो चुके थे इस लिये आप जानते थे कि यतीम होना कितना सख़्त मरहला है यही वजह थी कि आप हमेशा अपने असहाब से सिफ़ारिश करते थे कि यतीमों

के साथ मेहरबानी से पेश आएँ और उनकी मदद करें।

यतीम लड़का ख़ामोशी से खड़ा पैग़म्बर स0व0 के जवाब का इन्तेज़ार करने लगा पैग़म्बर स0व0 ने मुहब्बत के साथ कहा बेटा तुमने कितनी अच्छी बात की है अभी मेरे घर जाओ और जो भी खाने के लिये मिले लेकर आ जाओ।

वह लड़का पैग़म्बर स0व0 के घर चला गया जहाँ से उसे कुछ ख़जूरें मिलीं वह पैग़म्बर स0व0 के पास आया तो उसके पास 21 ख़जूरें थीं जो उसने पैग़म्बर स0व0 के हाथ में दे दीं पैग़म्बर स0व0 ने ख़जूरों पर एक नज़र डाली फिर खुदा से दुआ की कि इनमें बरकत अता करे उसके बाद यतीम लड़के से कहने लगे बेटा उसमें से सात ख़जूरें तुम्हारे लिये सात तुम्हारी अम्मी के लिये और सात तुम्हारी बहन के लिये हैं।

उन अय्याम में मुसलमानों के हालात बहुत ख़राब थे इस लिये 21 ख़जूरों से काफ़ी लोगों की भूक मिट सकती थी वह लड़का खुशी अपने घर की तरफ़ रवाना हुआ क्योंकि वह ख़जूरों को जल्द से जल्द अपनी अम्मी और बहन के पास पहुँचाना चाहता था।



अशफियों की थैली

एक बादशाह के ज़माने में एक काज़ी (जज) के पास उसके एक ताजिर दोस्त ने अशफियों की एक थैली अमानत के तौर पर रखवाई और खुद कारोबार के लिए दूसरे देश चला गया।

वपस आने पर उसने काज़ी से अपनी थैली वापिस माँगी जो उस काज़ी ने वापस कर दी। ताजिर थैली लेकर अपने घर चला गया। घर जा कर उसने थैली खोली तो अशफियों की जगह उसमें ताँबे के सिक्के थे। उसने काज़ी के पास आकर कहा कि इसमें जो अशफियाँ थीं वह कहाँ गई? काज़ी ने जवाब दिया कि “भाई जिस तरह तुम बंद थैली दे कर गए थे मैंने उसी तरह तुम्हारे हवाले कर दी। अब मुझे क्या मालूम कि इसमें अशफियाँ थीं या ताँबे के सिक्के।” वह

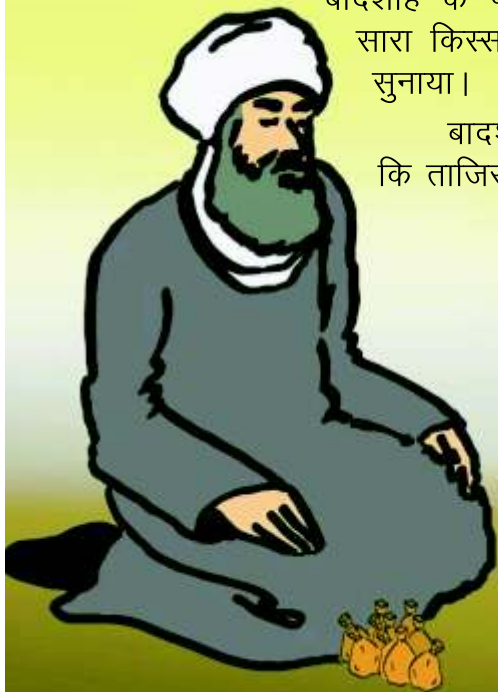
ताजिर अपनी फरियाद लेकर बादशाह के पास गया और सारा किस्सा बादशाह को सुनाया।


बादशाह समझ गया कि ताजिर सच कह रहा

है लेकिन इस बात का कोई जवाब नहीं था कि बंद थैली में अशफ़ी के बजाए ताँबे के सिक्के कैसे चले गए? बादशाह ने कहा कि तुम यह थैली मेरे पास रहने दो और फैसला करने का कोई तरीका सोचने के लिए मुझे कुछ दिन का वक़्त दो। ताजिर ने वह थैली बादशाह के हवाले कर दी और खुद चला गया।

बादशाह ने कुछ देर सोचने के बाद अपने खंज़र से उस कालीन को एक तरफ़ से काट दिया जो तख़्त पर बिछा हुआ था और उसके फौरन बाद हुक्म दिया कि हम शिकार को जाएँगे। फिर बादशाह शिकार पर रवाना हो गया।

बादशाह की रवानगी के बाद जब वज़ीर लोग वापिस लौटे तो वह यह देख कर हैरान रह गए कि शाही तख़्त का कालीन एक तरफ़ से कटा हुआ है। सब सोचने लगे कि अब क्या किया जाए? शिकार से वापसी के तीन दिन के बाद जब





बादशाह को यह पता चलेगा कि क़ालीन कट गया है तो अल्लाह जाने किस-किस की शामत आएगी।

वह यह बात सोच ही रहे थे कि उनमें से एक बोल उठा। अरे भाई! क्यों फ़िक्र करते हो, अहमद रफूगर (रफू करने वाला) को बुला लो। वह इसको ऐसा बना देगा कि बादशाह के फ़रिश्तों को भी ख़बर न होगी कि कभी क़ालीन कटा भी था।

इसलिए अहमद रफूगर को बुला कर उससे कहा गया कि जितनी जल्दी हो सके क़ालीन को इस तरह रफू कर दो कि कोई यह न समझ सके कि उसे रफू किया गया है।

अहमद रफूगर ने यह काम दो दिन में पूरा कर दिया। तीसरे दिन बादशाह शिकार से वापस आया, तो देखा कि क़ालीन सही कर दिया गया है।

वह खुद यह न समझ सका कि उसे कहाँ से रफू किया गया है। बादशाह ने वज़ीरों से कहा यह क़ालीन काट कर रफू कर दिया गया है। वज़ीरों ने कसमें खाईं कि आलीजनाब ऐसा नहीं हुआ। इस पर बादशाह ने कहा कि मैंने खुद इस क़ालीन को काटा था।

बताया जाए कि किसने इसे रफू किया है? बादशाह को बताया गया कि यह काम अहमद रफूगर ने किया है। बादशाह ने अहमद को बुलाया और वह थैली दिखा कर कहा कि देखो! कहीं यह थैली तो तुम्हारे पास रफू के लिए नहीं आई थी? पहले तो अहमद ने इन्कार किया मगर जब बादशाह ने सख्ती से पूछा तो उसने कहा कि “जी हाँ! यह थैली एक काज़ी (जज) साहब मेरे पास लाए थे जिसे मैंने रफू कर दिया था। बादशाह ने उसी वक़्त काज़ी को बुलाया और कहा कि ताजिर की अशफ़ियाँ फौरन वापिस कर दो नहीं तो तुम्हें सख्त सज़ा दी जाएगी, आख़िर काज़ी ने वह अशफ़ियाँ लाकर बादशाह के सामने पेश कर दीं जो बादशाह ने ताजिर के हवाले कर दीं। काज़ी के ख़िलाफ़ केस चलाया गया और उसे सज़ा दी गई।





माहे रमज़ान की बहार

मेरा पसंदीदा महीना माहे रमज़ान आने ही वाला है। मैं बहुत खुश हूँ।

अली आज शाम से ही बहुत खुश था। स्कूल में गर्मियों की छुट्टियाँ शुरू हो चुकी थीं और साथ ही माहे रमज़ान का आना।

दादीजान ने इस तरह खुशी से झूमते हुए अली को देखा तो उससे वजह पूछी जिस पर उसने कहा कि

“दादीजान दो दिन बाद माहे रमज़ान शुरू हो जाएगा जोकि मेरा फेवरेट महीना है। मैं इस महीने में बहुत इन्जवाय करता हूँ। रोज़ ही रात में मोहल्ले में लगने वाले मेले की सैर करता हूँ और झूले झूलता हूँ। ख़ूब चीज़ भी खाने को मिल जाती हैं और साथ विकेन्ड नाइट पर होने वाली बाहर की सहरी और अप्तार में मिलने वाले लज़ीज़ पकवान। उन्हें सोच कर ही मेरे मुँह में पानी आ रहा है।”

अली का जवाब सुनने के बाद दादीजान ने मुस्कुराते हुए कहा कि “अली बेटा माहे रमज़ान आपका ही नहीं हमारे आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद स० और तमाम आइम्मा का भी पसंदीदा महीना है।


लेकिन उनकी पसंद की वजह यह नहीं जो आपकी है बल्कि अस्ल में यह महीना इबादतों का महीना है एक ख़ास अन्दाज़ में खुदा के हुक्म की पैरवी करने का महीना, सैर व तफ़री का हरगिज़ नहीं।”

दादीजान की इस बात पर मैंने कहा “दादीजान यकीनन माहे रमज़ान दूसरे तमाम महीनों से अलग हैं हम माहे रमज़ान में अपने दिन और रात खुदा के दिए हुए टाइम टेबिल के मुताबिक़ गुज़ारते हैं। आधी रात में सहरी और फिर पूरे दिन की भूख और प्यास के बाद मगरिब के वक़्त इफ़्तार। जोकि हमारे पूरे साल के रूटीन से बिल्कुल ही अलग है और यही इस महीने की ख़ासियत भी है। और साथ इस महीने में लगने वाले मेले से तो इसकी रौनक़ और भी बढ़ जाती है। असल में माहे रमज़ान की बहार तो यही मेले और सहरी व इफ़्तार की दावतें हैं।”

दादीजान ने मुझे घुरते हुए कहा :

अस्तग़फ़ार। यह किस चीज़ में उलझ कर रह गए हो सब। हरगिज़ ऐसा नहीं! माहे रमज़ान की असली बहार तो कुर्आन मजीद है।

यह सैर व तफ़रीह अपनी जगह बुरी नहीं, यह



हरगिज़ माहे रमज़ान की अस्ल और रुह नहीं है, बल्कि यह महीना तो खुलूस के साथ इबादत का है और उनमें भी बेहतरीन इबादत रोज़े के बाद कुर्आन की तिलावत है।”

अली ने फ़ौरन कहा! “लेकिन दादीजान कुर्आन मजीद की तिलावत तो हम रोज़ ही करते हैं। तो सिर्फ़ माहे रमज़ान बहारे कुर्आन कैसे हो सकता है?”

मैंने अली के इस सवाल पर फ़ौरन कहा “मैं बताऊं दादीजान?”

दादीजान ने सर हिलाते हुए कहा “हाँ ज़रूर।”

मैंने कहा “चूँकि कुर्आन मजीद का नुज़ूल माहे रमज़ान में हुआ है, शायद इसीलिए उसे बहारे कुर्आन कहते हैं।”

दादीजान ने मुझे शाबाशी देते हुए कहा।

“हाँ बिल्कुल ऐसा ही है।” फिर अली से कहा। “क्या तुम जानते हो कुर्आन मजीद माहे रमज़ान की कौन सी तारीख़ में नाज़िल हुआ?”

अली ने अपनी अँगुली तुड़ड़ी पर रख कर कुछ देर सोचते हुए कहा। “मुझे नहीं मालूम।”

दादीजान ने कहा “कुर्आन मजीद अल्लाह ने इस माह में उन्नीसवीं मुबारक रात शबे क़द्र में नाज़िल फ़रमाया है।”

अली ने कहा “ओह! इसका मतलब माहे रमज़ान में कुर्आन मजीद का बर्थडे मनाते हैं।”

दादीजान ने अली की इस बात पर मुस्क्राते हुए कहा “हाँ तुम यह भी कह सकते हो। लेकिन अस्ल में अल्लाह ने शबे क़द्र में कुर्आन मजीद हमारे आखिरी नबी को गिफ़्ट किया। और हम पर इसकी तिलावत के साथ साथ इस पर अमल करना भी हमारा फ़र्ज़ है और ख़ास तौर से माहे रमज़ान में कुर्आन मजीद की तिलावत की

अहमियत और इसका अज़्र बेपनाह है।”

मैं और अली दोनों ही दादीजान की बातें बहुत ध्यान से सुन रहे थे। उन्होंने हमें इस बारे में और बताया कि “बच्चों! जैसे मौसमी बहार में बाग़ में हर जगह रंग बिरंगे फूल खिलते हैं और उनकी खुशबू से पूरा बाग़ महक उठता है, उसी तरह रमज़ानुल मुबारक की बहार कुर्आन मजीद है। हमें कोशिश करनी चाहिए कि कुर्आन ही को अपनी सहर व इफ़तार की महफ़िल की रौनक बनाएं और इसी ज़िक्र इलाही से अपने घरों और दिलों को रौशन करें।”

और फिर हमने दादीजान के साथ मिल कर अपना माहे रमज़ान का शिड्यूल भी प्लान किया जिसमें ज़्यादा वक़्त तिलावत कुर्आन और कुछ हिस्सा सैर व तफ़रीह के लिए भी रखा। लेकिन चूँकि इस माह की असली बहार कुर्आन पाक है, लेहाज़ा हमने घर में ही रोज़ाना सबके साथ मिल कुर्आन पढ़ने की शुरुआत की जिसमें हम तमाम घर वाले सुबह की नमाज़ के बाद बाहर हॉल में जमा हो जाते और फिर बाबाजान किसी अच्छे कारी की ख़ूबसूरत आवाज़ में कुर्आन की आडियो प्ले कर देते और हम सब मिल कर उन्हें सुनते और इसी तरह कुर्आन की तिलावत करते।

रोज़ाना इसी तरह एक पारे की तिलावत से एक माह में अली और मैंने कुर्आन पूरा कर लिया। वरना तो हम सिर्फ़ कुछ हिस्सा ही पढ़ सकते थे।

इस साल भी अली और मैंने यही प्यान किया है कि हम सबके साथ मिल कर माहे रमज़ान में कुर्आन पढ़ेंगे, इन्शा अल्लाह। और फिर सैर सपाटे के लिए तो पूरा साल है ही हमारे पास, इसलिए मेले की सैर, झूले और लज़ीज़ खाने सिर्फ़ विकेण्ड नाइट ही में एन्जवॉय करेंगे जैसा आम दिनों में करते हैं।

जाबिर इब्ने हय्यान

प्यारे दोस्तो, अस्सालम अलैकुम! कैसे हैं आप लोग? उम्मीद करता हूँ कि आपकी की छुट्टियाँ बहुत अच्छी गुज़री होंगी और आप लोगों ने मज़े-मज़े के इस्लामी नाटक देखे होंगे। मैंने भी एक बहुत दिलचस्प नाटक देखा!

प्यारे दोस्तों! क्या आपने “जाबिर इब्ने हय्यान” का नाम सुना है? उन्हें बाबा-ए-केमिस्ट्री (जिमत वी बीमउपेजतल) कहा जाता है। यह हमारे छठे इमाम जाफ़र सादिक अ० के ज़माने में थे और अपने इल्म की उस्तादी अपने इमाम से ही हासिल की थी। आज जो केमिस्ट्री के माहिर नए-नए आविश्कार करते हैं उन सब की बुनियाद जाबिर इब्ने हय्यान ही ने रखी थी, यानी एक तरह से हमें हर दवा और इलाज के लिए जाबिर इब्ने हय्यान का शुक्र गुज़ार होना चाहिए। इस फ़िल्म में भी जाबिर इब्ने हय्यान की ज़िन्दगी के बहुत मुश्किल और ख़तरनाक हालात पर रोशनी डाली गई है।

वैसे तो जाबिर इब्ने हय्यान “खुरासान” में पैदा हुए और शुरुआती ज़िन्दगी वहीं गुज़ारी लेकिन इमाम जाफ़र सादिक अ० से मुहब्बत की वजह से आप और दूसरे शीअः बहुत मुश्किल हालात में थे। अब्बासी खलीफ़ा के दौर की शुरुआत थी और जुल्म बहुत हो रहे थे। सिर्फ़ शीअः होने का इल्ज़ाम ही क़त्ल के लिए काफी था।

इन हालात से बचने के लिए शीओं का एक ग़िरोह हिजरत की नियत से खुरासान से बाहर निकला ही था कि उनके पीछे उनके घर वालों पर हमला हुआ और जाबिर इब्ने हय्यान की माँ को शहीद कर दिया गया। इस दुख के साथ वह सब बसरा के तरफ़ चल दिये। अरब की मशहूर गर्मी तो बर्दाश्त कर ही रहे थे कि रास्ते में ही डाकूओं ने उनके काफ़िले पर हमला कर दिया और सारा सामान बिखरा दिया कि शायद कोई कीमती चीज़ मिल जाए। कीमती चीज़ तो न मिली, लेकिन एक सुराही में बकरी का दूध था जो डाकूओं के सरदार ने पूरा पी लिया और फिर अपना पेट पकड़ कर बैठ गया। सारे डाकू उसकी तरफ़ ध्यान से देखने लगे। डाकूओं को पकड़े जाने का डर भी था



और अपने सरदार के पेट के दर्द की फ़िक्र भी थी।

जाबिर इब्ने हय्यान सारी चीज़ों को ख़ामोशी से देख रहे थे। उन्होंने डाकूओं को ईलाज बताया। पहले तो डाकू न माना लेकिन फिर तकलीफ़ से परेशान होकर दवा कुबूल कर ली। जाबिर इब्ने हय्यान के इल्म से बनी दवा पीते ही डाकू को आराम मिल गया और उसने शर्त के मुताबिक़ काफ़िले को छोड़ दिया। अल्लाह-अल्लाह करते हुए यह काफ़िला बसरा पहुँचा। लेकिन वहाँ भी सुकून नहीं मिला।

जाबिर इब्ने हय्यान “उनवान” नाम के अहलेबैत के चाहने वाले के घर में मेहमान हुए। उनवान की एक बीमार बीवी थी जिनका जाबिर इब्ने हय्यान ईलाज करने की बहुत कोशिश कर रहे थे लेकिन इसके बावजूद उसका इंतक़ाल हो गया। अभी यह इम्तेहान ख़त्म न हुआ था कि ज़ालिम हाकिम के सिपाही जाबिर इब्ने हय्यान को गिरफ़्तार करके ले गए। उन पर इल्ज़ाम था कि वह खुदाई का दावा करते हैं। ख़ैर मैंने इसके आगे बताया तो फ़िल्म देखने का मज़ा ख़राब हो जाएगा। इस फ़िल्म को देखने से मुझे मज़ा तो बहुत आया लेकिन साथ में इस बात का एहसास भी हुआ कि हम तक अहलेबैत के इल्म को कितनी मुसीबत से पहुँचाया गया है। इसलिए इसकी कद्र करना हम पर फ़र्ज़ है। आने वाली छुट्टी पर यह फ़िल्म ज़रूर देखियेगा।

انسانی حقوق (Right)

امام زین العابدین علیہ السلام کی نظر میں



ذریعہ سے وہ تمہیں جہل کی تاریکیوں سے نکال کر علم کے اجالوں میں لے کر آئے گا۔

۹۔ تمہاری ماں کا حق یہ ہے کہ اس نے تجھے اپنے پیٹ میں پالا ہے، اپنا دودھ تمہیں پلایا ہے۔ تمہارے لئے ہر طرح کی تکلیف اور پریشانی کو برداشت کیا ہے، تمہیں کھلاتی تھی لیکن خود بھوکی رہتی تھی، تمہیں پلاتی تھی لیکن خود پیاسی رہتی تھی، تمہیں سائے میں رکھتی تھی اور خود دھوپ میں جلتی تھی، اس کی قدر جانو اور اس کا احترام کرو۔

۱۰۔ جس شخص نے تمہارے ساتھ کوئی نیکی کی ہے اس کا حق یہ ہے کہ اس کا شکریہ ادا کرو، اس کی کی ہوئی نیکی کو یاد رکھو اور اس کی تعریف کرو، اس کے لئے خدا سے دعا کرو اور اس کی نیکی کا بدلہ کرنے کی کوشش کرو۔

۱۱۔ تمہارے دوست کا حق یہ ہے کہ جہاں تک ہو سکے اس کے ساتھ نیک برتاؤ کرو مشکل میں اس کا ساتھ دو، دوسروں سے اس کی برائی نہ کرو۔

۱۲۔ جن کے ساتھ تمہارا اٹھنا بیٹھنا ہے ان کا حق یہ ہے کہ ان کو دھوکہ نہ دو، ان سے جھوٹ نہ بولو۔

۱۳۔ تمہارے بڑوں کا حق یہ ہے کہ ان کے سن و سال کا خیال رکھو اور ان کا احترام کرو۔

۱۴۔ تمہارے چھوٹوں کا تم پر حق یہ ہے کہ ان سے محبت و پیار کرو، ان کو اچھی باتیں سکھاؤ، ان کے ساتھ نرم مزاجی سے پیش آؤ، ان کی غلطیوں کو معاف کرو۔

۱۔ تمہارے اوپر خدا کا سب سے بڑا حق یہ ہے کہ اس کی عبادت کرو۔

۲۔ تمہاری زبان کا حق یہ ہے کہ اس سے بدگوئی (بری باتیں) نہ کرو، اسے اچھی باتوں کی عادت ڈالو اور اسے ادب و احترام کے ساتھ استعمال کرو، حق بولو، پہلے تو پھر بولو۔

۳۔ کانوں کا حق یہ ہے کہ اسے نیک اور اچھی باتیں سننے کا عادی بناؤ کیونکہ جو کچھ سنتے ہو وہ تمہارے دل و دماغ میں اترتا ہے۔

۴۔ آنکھ کا حق یہ ہے کہ اس سے وہی دیکھو جو تمہارے لئے حلال ہے۔

۵۔ تمہارے پیروں کا حق یہ ہے کہ برائی کی طرف نہ بڑھیں، انہیں ایسے کاموں اور جگہوں کے لئے استعمال نہ کرو جو تمہاری ذلت کا سبب بنیں۔

۶۔ ہاتھ کا حق یہ ہے کہ باطل کی طرف نہ اٹھیں کہ کہیں اس کے ذریعہ خدا کے عذاب کا شکار نہ ہو جاؤ، تمہارے ہاتھ ان چیزوں کے لئے استعمال ہوں جو تمہارے لئے جائز اور حلال کی گئی ہے اور ان چیزوں میں استعمال نہ ہو جن سے تمہیں روکا گیا ہے۔

۷۔ تمہارے پیٹ کا حق یہ ہے کہ اسے حرام چیزوں کا انبار نہ بناؤ۔

۸۔ تمہارے استاد کا تمہارے اوپر حق یہ ہے کہ اس کا احترام کرو، اس کی باتوں پر دھیان دو، کیونکہ اس میں تمہاری بھلائی ہے، تاکہ وہ تمہیں وہ چیزیں سکھائے جن کی تمہیں ضرورت ہے، پورے دھیان لگن اور سمجھداری سے اس کی باتیں سنو اس کے

بتایا جائے کہ کس نے اسے رفو کیا ہے؟ بادشاہ کو بتایا گیا کہ یہ کام احمد رفوگر نے کیا ہے۔

بادشاہ نے احمد کو بلایا اور وہ تھیلی دکھا کر کہا۔ دیکھو! کہیں یہ تھیلی تو تمہارے پاس رفو کیلئے نہیں آئی تھی؟ پہلے تو احمد نے انکار کیا مگر جب بادشاہ نے سختی سے پوچھا تو اس نے کہا ”جی ہاں! یہ تھیلی فلاں قاضی (منج) صاحب میرے پاس لائے تھے جس میں نے رفو کر دیا تھا۔ بادشاہ نے اسی وقت قاضی کو بلایا اور کہا کہ تاجر کی اشرفیاں فوراً واپس کر دو ورنہ تمہیں سخت سزا دی جائے گی، آخر قاضی نے وہ اشرفیاں لا کر بادشاہ کے سامنے پیش کر دیں جو بادشاہ نے تاجر کے حوالے کر دیں۔ قاضی کے خلاف مقدمہ چلایا اور اسے سزا دلائی۔

سب سوچنے لگے کہ اب کیا کیا جائے۔ شکار سے واپسی پر تین دن کے بعد جب بادشاہ کو یہ پتہ چلے گا کہ قالین کٹ گیا ہے تو حذا جانے کس کس کی شامت آئے۔ وہ یہ بات سوچ ہی رہے تھے کہ ان میں سے ایک بول اٹھا۔ ارے بھائی! کیوں فکر کرتے ہو، احمد رفوگر (رفو کرنے والا) کو بلا لو وہ اس کو ایسا بنادے گا کہ بادشاہ کے فرشتوں کو بھی خبر نہ ہوگی کہ کبھی قالین کٹا تھا۔ اسلئے احمد رفوگر کو بلا کر اس سے کہا گیا کہ جتنی جلد ہو سکے قالین کو اس طرح رفو کر دو کہ کوئی یہ نہ جان سکے کہ اسے رفو کیا گیا ہے۔ احمد رفوگر نے یہ کام دو دن میں مکمل کر دیا۔ تیسرے دن سلطان شکار سے واپس آیا تو اس نے قالین کی صحیح سلامت پایا۔

بادشاہ خود یہ نہ جان سکا کہ اسے کہاں سے رفو کیا گیا ہے۔ بادشاہ نے اپنے وزیروں سے کہا کہ یہ قالین کاٹ کر مرمت کرایا گیا ہے۔ وزیروں نے قسمیں کھائیں کہ عیجاہ ایسا نہیں ہوا۔ اس پر بادشاہ نے کہا کہ میں نے خود اس قالین کو کاٹا تھا۔



اشرفیوں کی تھیلی

بادشاہ سمجھ گیا کہ تاجر سچ کہتا ہے لیکن اس کا کوئی جواب نہ تھا کہ بند تھیلی میں اشرفیوں کے بجائے تانبے کے سکے کیسے چلے گئے؟ سلطان نے کہا کہ تم یہ تھیلی میرے پاس رہنے دو اور فیصلہ کرنے کا کوئی طریقہ سوچنے کیلئے مجھے کچھ دن کا وقت دو۔ تاجر نے وہ تھیلی بادشاہ کے حوالے کی اور خود چلا گیا۔ سلطان نے کچھ دیر سوچنے کے بعد اپنے خنجر سے اُس قالین کو ایک طرف سے کاٹ دیا جو تخت پر بچھا ہوا تھا اور اس کے فوراً بعد حکم دیا کہ ہم شکار کو جائیں گے۔ بھر بادشاہ شکار پر روانہ ہو گیا۔

بادشاہ کی روانگی کے بعد جب وزیر وغیرہ واپس لوٹے تو وہ یہ دیکھ کر حیران رہ گئے کہ تخت شاہی کا قالین ایک طرف سے کٹا ہوا ہے۔

ایک قاضی (جج) کے پاس، اس کے ایک دوست تاجر نے اشرفیوں کی ایک تھیلی بطور امانت رکھوائی اور خود کاروبار کیلئے دوسرے ملک چلا گیا۔

واپسی پر اس نے قاضی سے اپنی تھیلی واپس مانگی جو اس نے واپس کر دی۔ تاجر تھیلی لے کر گھر چلا گیا۔ گھر جا کر اس نے تھیلی کھولی تو اشرفیوں کی بجائے اس میں تانبے کے سکے تھے۔ اس نے قاضی کے پاس آ کر کہا اس میں جو اشرفیاں تھیں وہ کہاں گئیں؟ قاضی نے جواب دیا ”بھئی جس طرح تم بند تھیلی دے گئے تھے میں نے اسی طرح تمہارے حوالے کر دی۔ اب مجھے کیا معلوم کہ اس میں اشرفیاں تھیں یا تانبے کے سکے۔“ تاجر فریاد لے بادشاہ کے پاس گیا اور سارا واقعہ بادشاہ کو سنا دیا۔



میں اور علی دونوں ہی دادیجان کی باتیں بہت غور سے سن رہے تھے۔ انہوں نے ہمیں اس کے بارے میں بتایا کہ "بچوں! جیسے موسم بہار میں باغ میں ہر جگہ رنگ برنگے پھول کھلتے ہیں اور ان کی خوشبو سے پورا باغ مہک اٹھتا ہے، اسی طرح رمضان المبارک کی بہار قرآن مجید ہے۔ ہمیں کوشش کرنی چاہئے کہ قرآن ہی کو اپنی سحر و افطار کی محفل کی رونق بنائیں اور اسی ذکر الہی سے اپنے گھروں اور دلوں کو روشن کریں۔"

اور پھر ہم نے دادیجان کے ساتھ مل کر اپنا ماہ رمضان کا شڈ یول بھی پلان کیا جس زیادہ وقت تلاوت قرآن اور کچھ حصہ سیر و تفریح کے لئے بھی رکھا۔ لیکن چونکہ اس ماہ کی اصلی بہار قرآن پاک ہے، لہذا ہم نے گھر میں ہی روزانہ سب کے ساتھ مل کر قرآن پڑھنے کی شروعات کی جس میں ہم تمام گھر والے صبح کی نماز کے بعد باہر ہال میں جمع ہو جاتے اور پھر باباجان کسی اچھے قاری کی خوبصورت آواز میں قرآن کی آڈیو چلا دیتے اور ہم سب مل کر انہیں سنتے اور اسی طرح قرآن کی تلاوت کرتے۔

روزانہ اسی طرح ایک پارے کی تلاوت سے ایک ماہ میں علی اور میں نے قرآن مکمل کر لیا۔ ورنہ تو ہم صرف کچھ حصہ ہی پڑھ سکتے تھے۔

اس سال بھی علی اور میں نے یہی پلان کیا ہے کہ ہم سب کے ساتھ مل کر ماہ رمضان میں ترتیل کے ساتھ قرآن پڑھیں گے، انشاء اللہ۔ اور پھر پکنک کے لئے تو پورا سال ہے ہی ہمارے پاس اس لئے میلے کی سیر، جھولے اور لذیذ کھانے صرف ویکینڈ نائٹ ہی میں انجوائے کریں گے جیسا عام دنوں میں کرتے ہیں۔

اصل اور روح نہیں ہے، بلکہ یہ تو خلوص کے ساتھ عبادت کا مہینہ ہے اور ان میں بھی بہترین عبادت روزے کے بعد قرآن کی تلاوت ہے۔"

علی نے فوراً کہا! "لیکن دادیجان قرآن مجید کی تلاوت تو ہم روز ہی کرتے ہیں۔ تو صرف ماہ رمضان بہا قرآن کیسے ہو سکتا ہے؟"

میں نے علی کے اس سوال پر فوراً کہا "میں بتاؤں دادیجان؟"

دادیجان نے سر ہلا کہا "جی ہاں ضرور۔" میں نے کہا "چونکہ قرآن مجید کا نزول ماہ رمضان میں ہوا ہے، شاید اسی لئے اس بہار قرآن کہتے ہیں۔"

دادیجان نے مجھے شاباشی دیتے ہوئے کہا۔ جی ہاں بالکل ایسا ہی ہے۔ "پھر علی سے کہا۔" کیا تم

جانتے ہو قرآن مجید رمضان کی کون سی تاریخ میں نازل ہوا؟" علی نے کچھ دیر سوچتے ہوئے کہا۔ "مجھے نہیں معلوم۔"

دادیجان نے کہا "قرآن مجید اللہ نے اس ماہ میں، شب قدر میں نازل فرمایا ہے۔"

علی نے کہا "اوہ! اس کا مطلب ماہ رمضان میں قرآن مجید کا برتھ ڈے مناتے ہیں۔"

دادیجان نے علی کی اس بات پر مسکراتے ہوئے کہا "جی ہاں آپ یہ بھی کہہ سکتے ہیں۔ لیکن اصل میں اللہ نے

شب قدر میں قرآن مجید ہمارے آخری نبی کو گفٹ کیا۔ اور ہم

پراس کی تلاوت کے ساتھ ساتھ اس پر عمل کرنا بھی ہمارا فرضہ قرار دیا۔ خاص طور سے ماہ رمضان میں قرآن مجید کی تلاوت کی اہمیت اور اس کا اجر بے پناہ ہے۔"



ماہ رمضان کی بہار

پسندیدہ مہینہ ہے۔ لیکن ان کی پسند کی وجہ یہ نہیں جو آپ کی ہے بلکہ اصل میں یہ مہینہ عبادتوں کا مہینہ ہے ایک خاص انداز میں خدا کے حکم کی پیروی کرنے کا مہینہ، سیر و تفریح کا ہرگز نہیں۔"

داد بیجان کی اس بات پر میں نے کہا "داد بیجان یقیناً ماہ رمضان دوسرے تمام مہینوں سے مختلف ہیں ہم ماہ رمضان میں اپنے دن اور رات خدا کے دیئے ہوئے نائم ٹیبل کے مطابق گزارتے ہیں۔ آدھی رات کو سحری اور پھر سارا دن کی بھوکھ اور پیاس کے بعد مغرب کے وقت افطار۔ جو کہ ہمارے پورے سال کے ریٹن سے بالکل ہی مختلف ہے اور یہی اس مہینے کی خاصیت بھی ہے۔ اور ساتھ اس ماہ میں لگنے والے میلے سے اس ماہ کی رونق اور بھی بڑھ جاتی ہے۔ اصل میں ماہ رمضان کی بہار تو یہی میلے اور سحری و افطار کی دعوتیں ہیں۔"

داد بیجان نے مجھے گھورتے ہوئے کہا:
استغفار۔ یہ کس چیز میں الجھ کر رہ گئے ہوتم لوگ۔ ہرگز ایسا نہیں ہے! ماہ رمضان کی حقیقی بہار تو قرآن مجید ہے۔
یہ سیر و تفریح اپنی جگہ بری نہیں، لیکن یہ ہرگز رمضان کی

میرا پسندیدہ مہینہ ماہ رمضان آنے ہی والا ہے۔ میں بہت خوش ہوں۔

علی آج شام سے ہی بہت خوش تھا۔ اسکول میں موسم گرما کی چھٹیاں شروع ہو چکی تھیں اور ساتھ ہی ماہ رمضان کا آنا۔
داد بیجان نے اس طرح خوشی سے جھومتے ہوئے علی کو دیکھا تو اس سے وجہ پوچھی جس پر اس نے کہا کہ:

داد بیجان دو دن بعد ماہ رمضان شروع ہو جائے گا جو کہ میرا فیوریٹ مہینہ ہے۔ میں اس مہینے میں بہت انجوائے کرتا ہوں۔ روز ہی رات میں محلے میں لگنے والے میلے کی سیر کرتا ہوں اور جھولا جھولتا ہوں۔ اچھی اچھی چیزیں بھی کھانے کو مل جاتی ہیں اور ساتھ ویکنڈ نائٹ پر ہونے والی باہر کی سحری اور افطار پارٹی میں ملنے والے مزیدار پکوان۔ انہیں سوچ کر ہی میرے منہ میں پانی آ رہا ہے۔"

علی کا جواب سننے کے بعد داد بیجان نے مسکراتے ہوئے کہا کہ "علی بیٹا ماہ رمضان آپ کا ہی نہیں ہمارے آخری نبی حضرت محمد صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اور تمام آئمہ علیہم السلام کا بھی



جانوروں پر رحم کرو

اور آپ کو آرام سے کھانا نہیں کھانے دیتا۔ اگر آپ اجازت دیں تو میں اسے یہاں سے بھگا دوں۔

امام حسن علیہ السلام نے فرمایا: نہیں نہیں، اس بے زبان جانور کو خدا نے پیدا کیا ہے۔ اور خدا اسے بھی دوست رکھتا ہے یہ بھوکا ہے میں خدا سے ڈرتا ہوں کہ میں خدا کی نعمت کھاؤں اور اس حیوان کو جو اسکی ہی مخلوق ہے کچھ نہ دوں وہ بھوکا ہے اور مجھے دیکھ رہا ہے۔

پیارے بچو! آپ نے دیکھا کہ امام حسن علیہ السلام نے ایک جانور کے ساتھ کیسا سلوک کیا۔ ہمیں بھی جانوروں کو پریشان نہیں کرنا چاہئے بلکہ انکو کھانا پانی دینا چاہئے کیونکہ وہ بھی اللہ تعالیٰ کی مخلوق ہیں۔

ایک دن امام حسن علیہ السلام کھانا کھا رہے تھے آپ علیہ السلام کے سامنے ایک کتا کھڑا دیکھ رہا تھا۔ امام حسن علیہ السلام ایک لقمہ اپنے منہ میں رکھتے اور ایک لقمہ، روٹی کا ٹکڑا کتے کے سامنے ڈال دیتے۔ کتا اسے کھاتا اور شکریہ ادا کرنے کے لئے اپنی دم ہلاتا اور غرغرتا پھر اپنا سر اُدھر اُدھر کرتا اور آپ کو دیکھنے لگتا۔ امام حسن علیہ السلام پھر لقمہ اس کے سامنے ڈال دیتے اور وہ اس کو اپنے منہ سے اٹھا کر کھا لیتا۔

ایک آدمی وہاں سے گزر رہا تھا۔ جب اس کی نظر امام حسن علیہ السلام پر پڑی تو وہ آپ کے پاس آیا اور عرض کیا کہ یہ اچھا نہیں کہ یہ کتا آپ کے سامنے کھڑا ہے



جابر ابن حیان

پیارے دوستو، السلام علیکم! کیسے ہیں آپ لوگ؟ امید کرتا ہوں کہ آپ کی چھٹیاں بہت اچھی گزری ہوں گی اور آپ لوگوں نے مزے، مزے کے اسلامی ڈرامے دیکھے ہوں گے۔ میں نے بھی ایک بہت دلچسپ ڈرامہ دیکھا!

پیارے دوستوں! کیا آپ نے "جابر ابن حیان" کا نام سنا ہے؟ انہیں بابائے کیمسٹری (father of chemistry) کہا جاتا ہے۔ یہ ہمارے چھٹے امام حضرت جعفر صادق علیہ السلام کے زمانے میں تھے اور اپنے علم کی استادی اپنے امام ہی سے حاصل کی تھی۔ آج جو کیمسٹری کے ماہر، نئی نئی ایجادات کرتے ہیں ان سب کی بنیاد جابر ابن حیان ہی نے رکھی تھی، یعنی ایک طرح سے ہمیں ہر دوا و علاج کے لئے جابر ابن حیان کا شکر گزار ہونا چاہئے۔ اس فلم میں بھی جابر ابن حیان کی زندگی کے بہت مشکل اور خطرناک حالات پر روشنی ڈالی گئی ہے۔ ویسے تو جابر ابن حیان "خراسان" میں پیدا ہوئے اور شروعاتی زندگی وہیں گزاری لیکن امام جعفر صادق علیہ السلام سے محبت کی وجہ سے آپ اور دوسرے شیعہ بہت مشکل حالات میں تھے۔ عباسی خلیفہ کے دور کی شروعات تھی اور ظلم بہت ہو رہے تھے۔ صرف شیعہ ہونے کا الزام ہی قتل کے لئے کافی تھا۔

ان حالات سے بچنے کے لئے شیعوں کا ایک گروہ ہجرت کی نیت سے خراسان سے باہر نکلا ہی تھا کہ ان کے پیچھے ان کے گھر والوں پر حملہ ہوا اور جابر ابن حیان کی ماں کو شہید کر دیا گیا۔ اس دکھ کے ساتھ وہ سب بصرہ کے طرف چل دیئے۔ عرب کی مشکور گرمی تو برداشت کر رہے تھے کہ راستے میں ہی ڈاکوؤں نے ان کے قافلے پر حملہ کر دیا اور سارا سفر کا سامان کھول کر رکھ دیا کہ شاید کوئی قیمتی چیز اس میں مل جائے۔

قیمتی چیز تو نہ ملی، لیکن ایک برتن میں بکری کا دودھ تھا جو ڈاکوؤں کے سردار نے پورا پی لیا اور پھر اپنا پیٹ پکڑ کر بیٹھ گیا۔ سارے ڈاکو اس کی طرف توجہ سے دیکھنے لگے۔ ڈاکوؤں کو پکڑے جانے کا ڈر بھی تھا اور اپنے سردار کے پیٹ کے درد کی فکر بھی تھی۔

جابر ابن حیان ساری چیزوں کو خاموشی سے دیکھ رہے تھے۔ انہوں نے جب ڈاکوؤں کو علاج بتایا۔ پہلے تو ڈاکو نہ مانا لیکن پھر تکلیف سے پریشان ہو کر دوا قبول کر لی۔ جابر ابن حیان کے علم سے بنی دوا پیتے ہی ڈاکو کو آرام مل گیا اور اس نے شرت کے مطابق قافلہ کو چھوڑ دیا۔ اللہ اللہ کرتے ہوئے یہ قافلہ بصرہ پہنچا۔ لیکن وہاں بھی سکون نہیں ملا۔

جابر ابن حیان "عنوان" نام کے اہل بیت کے چاہنے والے کے گھر میں مہمان ہوئے۔ عنوان کی بیمار بیوی تھی جس کا جابر ابن حیان علاج کرنے کی بہت کوشش کر رہے تھے لیکن اس کے باوجود اس کا انتقال ہو گیا۔ ابھی یہ امتحان ختم نہ ہوا تھا کہ ظالم حاکم کے سپاہی جابر ابن حیان کو گرفتار کر کے لے گئے۔ ان پر الزام تھا کہ وہ خدائی کا دعویٰ کرتے ہیں۔ خیر میں نے اس کے آگے بتایا تو فلم دیکھنے کا مزہ خراب ہو جائے گا۔ اس فلم کو دیکھنے سے مجھے مزہ تو بہت آیا لیکن ساتھ میں اس بات کا احساس بھی ہوا کہ ہم تک اہل بیت کے علم کو کتنی مصیبت سے پہنچایا گیا ہے۔ لہذا اس کی قدر کرنا ہم پر فرض ہے۔ آنے والی چھٹی پر یہ فلم ضرور دیکھئے گا۔

۲۱ کھجوریں

یتیموں کے ساتھ مہربانی سے پیش آئیں اور ان کی مدد کریں۔
یتیم لڑکا خاموشی سے کھڑا پیغمبر اکرمؐ کے جواب کا انتظار
کرنے لگا پیغمبر اکرمؐ نے محبت کے ساتھ کہا بیٹا تم نے کتنی اچھی
بات کی ہے۔ ابھی میرے گھر جاؤ اور جو بھی کھانے کے لیے
ملے لے کر آ جاؤ۔

وہ لڑکا پیغمبر اکرمؐ کے گھر چلا گیا جہاں سے اسے کچھ
کھجوریں ملیں وہ پیغمبر اکرمؐ کے پاس آیا تو اس کے پاس ۲۱
کھجوریں تھیں جو اس نے پیغمبر اکرمؐ کے ہاتھ میں دے دیں
پیغمبر اکرمؐ نے کھجوروں پر ایک نظر ڈالی پھر خدا سے دعا کی کہ
ان میں برکت عطا کرے اس کے بعد یتیم لڑکے سے کہنے لگے
بیٹا اس میں سے سات کھجوریں تمہارے لیے سات تمہاری
امی کے لیے اور سات تمہاری بہن کے لیے ہیں۔

ان ایام میں مسلمانوں کے حالات بہت خراب تھے
اس لیے ۲۱ کھجوروں سے کافی لوگوں کی بھوک مٹ سکتی تھی وہ
لڑکا خوش خوشی اپنے گھر کی طرف روانہ ہوا کیونکہ وہ کھجوروں کو
جلد از جلد اپنی امی اور بہن کے پاس پہنچانا چاہتا تھا۔

رسول خداؐ اپنے اصحاب کے ساتھ بیٹھے تھے کہ ایک لڑکا
آتا دکھائی دیا سب لوگ اس کو دیکھنے لگے کہ اس لڑکے کو پیغمبرؐ
سے کیا کام ہو سکتا ہے وہ لڑکا قریب آیا اور کہنے لگا۔

میرے والد کا انتقال ہو گیا ہے اور میں ایک یتیم بچہ
ہوں میرے ساتھ میری ماں اور ایک بہن بھی ہے ہم لوگ
بہت غریب اور بے کس ہیں اے خدا کے رسولؐ ہمیں کچھ
کھانے کے لئے دے دیجئے۔

یہ سب کہنے کے بعد اس نے حضرت محمدؐ کے لئے دعا کی
پیغمبر بھی بچپن میں یتیم ہو گئے تھے آپؐ کے والد کا تو آپؐ کی
والدہ سے پہلے ہی انتقال ہو گیا تھا اس کے بعد والدہ اور پھر دادا کا
بھی انتقال ہو گیا اس وقت آپؐ کی عمر آٹھ سال تھی اس کے بعد
سے آپؐ کے چچا اور حضرت علیؑ علیہ السلام کے والد ماجد حضرت
ابوطالبؑ علیہ السلام نے آپؐ کی پرورش کی لیکن آپؐ اپنی
ولادت سے پہلے ہی والد جیسی شفیق ہستی سے محروم ہو چکے تھے
اس لیے آپؐ جانتے تھے کہ یتیم ہونا کتنا سخت مرحلہ ہے یہی وجہ
تھی کہ آپؐ ہمیشہ اپنے اصحاب سے سفارش کرتے تھے کہ



اپنی نیند عبادت بنائیں

۳۔ روایت میں یہ بھی ملتا ہے کہ وضو کی حالت میں سونا بہت ثواب رکھتا ہے۔ جیسا کہ حضرت امام جعفر صادق علیہ السلام فرماتے ہیں کہ "جو شخص وضو کر کے سوئے، تو وہ جتنی دیر سویا رہے گا، اس کا بستر مسجد کی طرح عبادت گاہ ہے۔ یعنی اس کی نیند کے برابر عبادت کا ثواب ملے گا۔"

۴۔ "اگر جاڑے کا موسم ہو یا وضو کرنے میں کوئی پریشانی ہو تو روایت میں یہ بھی ملتا ہے کہ سوتے وقت بی بی فاطمہ زہرا کی تسبیح پڑھنے والے کو بھی ساری نیند میں بھی عبادت کا ثواب ملتا رہے گا۔" یہ تو آپ جانتے ہی ہوں گے بچوں کہ 34 بار اللہ اکبر، 33 بار الحمد للہ اور 33 بار سبحان اللہ پڑھنے کو تسبیح فاطمہ زہرا کہتے ہیں۔

۵۔ اگر آپ نیند کا ثواب ایک ہزار رکعت نماز پڑھنے کے برابر چاہتے ہیں تو جب بھی سوئیں تو یہ دعائیں بار پڑھ لیا کریں۔
يَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ بِقُدْرَتِهِ وَيَحْكُمُ مَا يَرِيدُ بِعِزَّتِهِ
اللہ آپ کو 1000 رکعت کا ثواب عطا فرمادے گا۔

دعا ہے کہ خدا ہمیں معصومین کی تعلیمات پر خلوص کے ساتھ عمل کرنے کی توفیق عطا فرمائے، (آمین)۔ کیونکہ ہمارے نامہ اعمال میں جتنی زیادہ نیکیاں ہوں گی انہیں دیکھ کر امام زمانہ اتنے ہی خوش ہوں گے۔

پیارے بچو! السلام علیکم (سلام کا جواب دے دیں) امید ہے کہ آپ سب لوگ خیریت سے ہوں گے۔ آج میں آپ کے لئے "سونے" سے پہلے کرنے کے لئے کچھ اعمال لے کر حاضر ہوا ہوں جو دیکھنے میں تو آپ کی طرح ننھے، منے، چھوٹے اور پیارے۔ پیارے ہیں مگر ان کا ثواب بہت زیادہ ہے۔ آپ لوگ دن یارات میں جب بھی سوئیں تو یہ اعمال ضرور کریں۔

۱۔ رسول اکرم فرماتے ہیں کہ "جو سونے سے پہلے (سورہ تکاثر) پڑھے، اللہ تعالیٰ اسے قبر کے عذاب سے محفوظ رکھے گا۔"

کتنا آسان کام ہے بچوں! یہ بہت چھوٹا سا سورہ ہے جو قرآن مجید کے ۳۰ ویں پارے میں ہے، آپ اس کو آسانی سے یاد کر سکتے ہیں۔ زبانی پڑھیں مگر امام جعفر صادق علیہ السلام فرماتے ہیں کہ "قرآن سے دیکھ کر پڑھنے کا ثواب زیادہ ہے۔"

۲۔ نبی کریمؐ نے فرمایا ہے کہ "جو شخص سونے سے پہلے "بسم اللہ الرحمن الرحیم" پڑھ لے تو اللہ فرشتوں سے فرماتا ہے، اے فرشتو! صبح (اس کے جاگنے تک) اس کی سانسوں کے برابر نیکیاں لکھتے رہو۔"

پیارے بچوں! ایک صحت منداگر ۸ گھنٹے سوتا ہے تو وہ نیند کے دوران بھی سینکڑوں بار سانس لیتا ہے۔ اس لئے ہمیں چاہئے کہ اس عمل سے بھی ضرور فائدہ اٹھائیں اور اپنی سانسیں بھی نیک بنائیں۔

اس کی ماں نے ایک پتیلی میں پانی ڈالا اور اس سے کہا: "بیٹا کھانا ابھی پک جائے گا، بس تھوڑی دیر صبر کرلو۔"

بچی نے کہا: "اماں اور کتنی دیر صبر کروں؟ مجھے بہت بھوک لگی ہے۔"

ماں کی سمجھ میں نہیں آ رہا تھا کہ وہ اس کو کیا جواب دے، کیونکہ گھر میں کھانے کو کچھ بھی نہیں تھا اور ماں نے پتیلی میں خالی پانی ڈال کر رکھ دیا تھا تاکہ بچی کا دل بہلا رہے۔

ابھی وہ یہ سوچ ہی رہی تھی کہ دروازے پر دستک ہوئی۔ ماں نے دروازہ کھولا تو دیکھا کہ امیر المومنین علی علیہ السلام کھڑے ہیں۔ وہ انہیں دیکھ کر بہت حیران ہوئی اور اندر آنے کو کہا۔ حضرت علی علیہ السلام ان کے لئے کھانے کا سامان لائے تھے۔

آپؐ نے عورت سے کھانا پکانے کو کہا اور خود بچی کے ساتھ کھیلنے لگے۔ آپؐ نے اس کے ساتھ کھیلا، باتیں کیں اور یہاں تک کہ بچی کو اپنے اوپر سوار کرایا۔ کھانا تیار ہو گیا تو بچی نے خوش ہو کر کھایا۔

اب حضرت علی علیہ السلام ان کے لئے روزانہ کھانا بھیجنے لگے۔ ایک دن مولیٰؑ دروازے پر نہیں آئے تو بچی اور اس کی ماں بہت پریشان ہو گئیں کہ ایسا تو کبھی نہیں ہوا کہ حضرت امیر المومنین علیہ السلام نے ان کے لئے کھانا نہ بھیجا ہو یا خود نہ آئے ہوں۔

ابھی وہ اسی کشمکش میں تھیں کہ منادی نے آواز دی کہ مولیٰؑ کو مسجد میں نماز کے دوران ضربت لگی ہے۔

بچی کی سمجھ میں یہ بات نہیں آئی اور وہ ماں سے پوچھنے لگی کہ مولیٰؑ کب آئیں گے۔

ماں نے کہا: "بیٹا وہ آج نہیں آئیں گے۔ انہیں ظالموں نے زخمی کر دیا ہے۔"

بچی نے پوچھا کہ اب کیا کریں تو ماں بولی "چلو، مولیٰؑ کے پاس چلتے ہیں۔"

بچی فوراً کمرے کے اندر گئی اور ایک کٹورا اٹھا کر اس میں مولیٰؑ کے لئے دودھ نکال کر اپنے ساتھ لے لیا۔ جب دونوں ماں بیٹی ان کے گھر پہنچیں، تو دیکھا کہ لوگ ماتم کرتے ہوئے گھر سے باہر نکل رہے ہیں اور کہہ رہے ہیں:

ہائے! آج ہم یتیم ہو گئے، ہمارے مولیٰؑ دنیا سے رخصت ہو گئے۔"

بچی نے یہ سنا تو دودھ کا پیالہ اس کے ہاتھ سے چھوٹ کر گر گیا اور پھوٹ پھوٹ کر رونے لگی۔ اسے مولیٰؑ بہت یاد آرہے تھے۔ وہ ان سے بہت مانوس ہو چکی تھی۔

بچوں! آپؐ کو پتہ ہے کہ وہ عیسائی بچی بڑی ہو کر کیا بنی؟ وہ بڑی ہوئی تو اس نے اسلام کو قبول کر لیا اور علوی کہلائی۔ علوی ان لوگوں کو کہتے ہیں جو مولیٰؑ سے بہت محبت کرتے ہیں۔



کے ساتھ رہتی تھی۔ وہ اپنے ماں باپ کی اکیلی بیٹی تھی۔ اسی لیے اس کے ماں باپ اس سے بہت محبت کرتے تھے۔ وہ چار یا پانچ سال کی تھی کہ اس کے باپ کا انتقال ہو گیا۔ اب ان کے پاس کوئی سہارا نہیں تھا اور وہ بالکل ناامید ہو گئے تھے۔ بچی بھوکی بھی تھی۔ جب وہ بہت پریشان ہو گئی تو اس نے اپنی ماں سے کہا: اماں کچھ کھانے کو دے دیں، مجھے بہت بھوک لگی ہے۔

امیر المومنین حضرت علی علیہ السلام کو بچوں سے بہت محبت تھی۔ وہ بچوں کے ساتھ وقت گزارتے، ان سے محبت کرتے اور انہیں کھانے پینے کی چیزیں لا کر دیتے تھے۔ غریب اور یتیم بچے مولا علیؑ سے بہت آس رکھتے تھے۔ کیونکہ وہ ان کو باپ کی کمی محسوس نہیں ہونے دیتے تھے۔ وہ بچوں کے ساتھ کھیلتے بھی تھے۔

شہر میں ایک عیسائی بچی بھی اپنے ماں باپ

2- قیامت کے دن سے ڈرتے ہیں۔

3- یہ خود کھانا نہیں کھاتے بلکہ دوسروں کو کھلاتے ہیں جبکہ انہیں اس کھانے کی خود بھی سخت ضرورت تھی۔ کبھی غریب کو، کبھی کسی یتیم کو اور کبھی کسی قیدی کو بہت بار انہوں نے کھانا کھلایا۔

یہ کھانا صرف اور صرف خدا کی خوشنودی کے لئے کھلایا گیا۔ کھانے والوں سے اس کے بدلے میں کوئی بدلہ حتیٰ کہ شکریہ کی خواہش و فرمائش بھی نہیں ہوئی۔

جی ہاں یہ کارنامہ درحقیقت اہلبیتؑ نے انجام دیا ہے۔ اس سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ اگر آپ کو نام و نمود اور پہلے کی فکر نہ ہو تو خداوند عالم آپ کے نام کو زندہ جاوید بنا دیگا۔ اہلبیتؑ نے جو کام انجام دیا تھا مالی اعتبار سے بظاہر اسکی زیادہ قیمت نہیں تھی لیکن چونکہ خلوص کے ساتھ وہ کام انجام دیا تھا اس لئے خداوند عالم نے اسے دائمی بنا دیا۔

ان کے خلوص کی ایک نشانی یہ بھی ہے کہ ان کو جو بھی ضرورت مند دکھائی دیا انہوں نے اسے روٹیاں دیدیں چاہے وہ مسکین ہو یا یتیم حتیٰ کہ قیدی (دشمن) کو اپنا کھانا کھلایا اور خود بھوکے سو گئے۔ یعنی وہ خیرات زیادہ قیمت رکھتی ہے جس کی ضرورت ہوتے ہوئے بھی اسے دوسرے کو کھلا دیا جلے۔ نہ یہ کہ جب چیز استعمال کے لائق نہ رہ جائے اس وقت کسی کو خیرات میں دی جلے۔ خدا کی نظر میں اسکی کوئی قیمت نہیں ہے۔

کھانا پینا فی روح کی ضرورت ہے:

کچھ لوگ صرف کھانا پسند کرتے ہیں۔ اور کچھ لوگ کھانا کھانا پسند کرتے ہیں۔ (بطمعون الطعام)

ان دونوں میں ایسے کھانا کھالانے کے قیمت ہے جو اپنے ہاتھوں سے دیا جلے یعنی یتیموں یا غریبوں کے گھر راشن

بھجوا دینا کافی نہیں بلکہ انہیں خود اپنے ہاتھ سے کھانا پیش کرے اور یہ سب دکھانے اور فوٹو کھچوانے کے لئے نہیں بلکہ صرف اور صرف خوشنودی خدا کے لئے ہوتی کہ دل میں یہ خواہش بھی نہ ہو کہ لینے والا ہمیں کم از کم شکریہ ہی کہہ دے۔

البتہ یہ دھیان رکھے کہ نیک افراد بے لوث خدمت ہی کرتے ہیں مگر لوگوں کے اوپر ان کا حق ضروری ہو جاتا ہے۔ جیسا کہ سورہ قصص آیت ۲۵ میں ہے کہ جب جناب موسیٰؑ نے جناب شعیبؑ کی بیٹیوں کی بیہوش بکریوں کو کسی مطالبہ کے بغیر پانی پلا دیا تو انہوں نے واپس آ کر کہا: ”ہمارے بابا نے آپ کو بلایا ہے تاکہ آپ کی سقائی کا اجر دے سکیں۔“

آیت میں یرفون سے یہ بھی واضح ہو گیا کہ نذر (منت) کا پورا کرنا واجب ہے۔ اور جواب ایسا نہیں کرے گا وہ عذاب الہی میں گرفتار ہوگا۔ اس لئے اسے عذاب الہی سے ڈرنا چاہئے۔

یعنی اگر ہم کوئی کام کریں تو اس کے لئے لوگوں سے ڈرنے کے بجائے خدا سے ڈریں اس لئے کہ روز قیامت اتنا سخت دن ہوگا کہ جب صرف لوگوں کے چہرے ہی نہیں بگڑے ہو گئے بلکہ وہ پورا دن ہی عبوس (گڑبڑ) ہوگا۔

لہذا اس گڑبڑ دن سے بچنے کے لئے ضروری ہے کہ ہم کسی غریب، فقیر، مسکین و یتیم اور اسیر کو دیکھ نہ برا سامنے بنائیں بلکہ مسکرا کر اس سے اسکی پریشانی معلوم کریں اور جہاں تک ممکن ہو اسکی مدد کریں اور اگر بالفرض خود اسکی مدد نہ کر سکیں تو:

یا تو پیار و محبت سے اس سے معافی مانگ کر اسے واپس کریں یا کم از کم اسے کسی ایسے شخص کے پاس پہنچا دیں جو اس کے کام آ سکے۔

تفسیر قرآن

سورہ انفسان (۳)

اپنے پروردگار سے اس دن کے بارے میں ڈرتے ہیں جس دن چہرے بگڑ جائیں گے اور ان پر ہوائیاں اڑنے لگیں گی (۱۰) تو خدا نے انہیں اس دن کی سختی سے بچالیا اور تازگی اور سرور عطا کر دیا (۱۱)

تفسیر:

ہر انسان کو اس کا مقصد خلقت بتانے کے بعد پروردگار عالم نے، اس سورہ میں ہمارے سامنے کائنات کے سب سے بہتر شاکروں کی مثال پیش کی ہے اور کمال کی بات تو یہ ہے کہ دنیا کے ان سب سے اچھے لوگوں میں مرد، عورتیں اور بچے سبھی شامل ہیں۔

یہ لوگ اتنے اچھے اور نیک کیسے بنے۔ خدا نے اس کا تذکرہ کرنے سے پہلے ان کے درجات اور مقام و مرتبہ کا اعلان کیا ہے۔ ابرار کے واسطے جنت کا شربت پینے کے لیے پیالہ ہوگا جس میں کافور کی آمیزش ہوگی (یا وہ اسی سے مل کر بنا ہوگا) اور وہاں شربت کا ایسا چشمہ ہوگا جسے اللہ کے نیک بندے اپنے اعتبار سے جاری کریں گے اور اس کی خوشبو سے پوری فضا معطر ہوگی۔ یہ شربت انہیں کو پینے کے لئے ملے گا جو اللہ کے سچے بندے (عباد اللہ) ہوں گے۔ یعنی اللہ کے جو سیدھے، سادھے اور متقی بندے اس دنیا میں بہت ساری حرام اور مشکوک چیزوں سے پرہیز کرتے ہیں۔ خداوند عالم روز قیامت اس کی تلافی کر دے گا۔ اللہ ان کو وہ طاقت دیگا کہ وہ جو بھی ارادہ کریں گے وہ کام انجام پا جائے گا۔

سوال یہ ہے کہ ان ابرار کو یہ مقام کیسے ملا ہے؟ اس کا جواب بعد والی آیتوں میں یوں دیا گیا ہے:

1- وہ لوگ اپنی نذر (منت) پوری کرتے ہیں۔

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللَّهِ يُفَجِّرُونَ نَهَا تَفْجِيرًا ﴿٦﴾
يُوفُونَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ﴿٧﴾
وَيُطْعَمُونَ السَّامِ عَلَى حَبِّهِ مَسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ﴿٨﴾
إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنْكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا ﴿٩﴾
إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَبِّنَا يَوْمًا غَمُّوسًا قَمَطِيرًا ﴿١٠﴾
فَوَقَاهُمُ اللَّهُ شَرَّ ذَلِكَ الْيَوْمِ وَلَقَّاهُمْ نَضْرَةً وَسُرُورًا ﴿١١﴾

ترجمہ

یہ ایک چشمہ ہے جس سے اللہ کے نیک بندے پئیں گے اور جدھر چاہیں گے بہا کر لے جائیں گے (۶) یہ بندے نذر کو پورا کرتے ہیں اور اس دن سے ڈرتے ہیں جس کی سختی ہر طرف پھیلی ہوئی ہے (۷) یہ اس کی محبت میں مسکین، یتیم اور اسیر کو کھانا کھلاتے ہیں (۸) ہم صرف اللہ کی مرضی کی خاطر تمہیں کھلاتے ہیں ورنہ نہ تم سے کوئی بدلہ چاہتے ہیں نہ شکریہ (۹) ہم

اَلسَّلَامُ عَلَیْكُمْ



فہرست

- (۱) تفسیر
- (۲) عیسائی بچی
- (۳) اپنی نیند عبادت بنائیں
- (۴) ۲۱ کھجوریں
- (۵) جابر ابن حیان
- (۶) جانوروں پر رحم
- (۷) ماہ رمضان کی بہار
- (۸) اشرفیوں کی تھیلی
- (۹) انسانی حقوق

جو لوگ ایمان لائے اور انہوں نے نیک اعمال کئے ان کے لئے ”طوبی“ (بہشت) اور بہترین پارکٹ ہے



جلد-۷، شمارہ-۷ جون ۲۰۱۷ء

یادگار:

خادم دین و ملت مولانا محمد علی آصف طب ثراہ

مجلس ادارت:

مولانا تصدیق حسین صاحب مولانا سعید الحسن صاحب مولانا کمیل اصغر صاحب

مدیر:

سید منظر صادق زیدی

نائب مدیر: سید محمد سبطین باقری

ترنین و آرائش: imagine
We Fix Imagination
9839099435

سالانہ زراعت: ۳۰۰ روپے

ناشر: ہدی مشن







موضع غازی پور، ڈاکخانہ گوگوان، ضلع مظفرنگر

یو پی انڈیا ۲۰۷۷۷۳، فون: 09927754886، 09890500072

برانچ آفس: شفاعت مارکیٹ زہرا کالونی، مفتی گنج، لکھنؤ-۲

Mob.: 09415090034, 09451085885

E-mail: tubamonthly@gmail.com

तत्वीरी रिपोर्ट	मुख्य समाचार
 <p>» दाइश के डर से दक्षिणी हजार कुदे सीरियाईयो का पलायन। © अक्टूबर १२, २०१५ _ ३७४/१९६</p>	 <p>वहरेन की जनता सावधान रहे और पड़चवी को नाकाम बना दे। अमेरिकन ही दाइश को हथियार उपलब्ध करता है। आईएसआईएल से निपटने के लिए सभी देशों से इराक की अपील आयतुल्लाह नुरी हमेदानी ने मुसलमानों के मध्य एकता पर घेल दिया आईएसआईएल से निपटने के लिए सभी देशों से इराक की अपील</p>
 <p>» पेश मेरा सैनिक बलों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर इराकी महिलाएं भी मैदान में। © अक्टूबर १२, २०१५ _ ३७४/१९६</p> <p>चीडियो</p>  <p>» अब देशों के बच्चों के खेल पर दाइश के अपराधी का असर। VIDEO</p> <p>» सऊदी अरब ने मज्जायासियों को कफन के रूप में पहुंचाई सहायता। CARTOON © डिसेंबर १८, २०१५ _ ११०४/१९६</p>  <p>» राजा पर इसाईनी हमले और ईस्टरनेशनल मौकिया। CARTOON © डिसेंबर १८, २०१५ _ ११०४/१९६</p>	<h3>हिंदुस्तान</h3> <p>» आईएसआईएल से लोहा लेते वाने भारतीय छात्र का भ्रम्य स्वागत</p> <p>» कश्मीर में आईएसआईएल के झंडे जहराए जाने से चिंता</p> <p>» ईरान ले राज्ञा, इराक, सीरिया, और कश्मीर के लिए श्रेजी सहायता</p> <p>» भारत ने अमरीकी गठबंधन में शामिल होने से किया इंकार</p> <p>» अलकायदा खोजगा भारतीय उपमहाद्वीप में अपनी नई शाखा।</p> <p>» भारतीय सुन्नी मौलाना शेख अबू बकर अहमद का दाइश के खिलाफ सद्यत एतबा।</p>
<p>» अब देशों के बच्चों के खेल पर दाइश के अपराधी का असर। VIDEO</p> <p>» सऊदी अरब ने मज्जायासियों को कफन के रूप में पहुंचाई सहायता। CARTOON © डिसेंबर १८, २०१५ _ ११०४/१९६</p>  <p>» राजा पर इसाईनी हमले और ईस्टरनेशनल मौकिया। CARTOON © डिसेंबर १८, २०१५ _ ११०४/१९६</p>	<h3>ISLAMIC COUNTRIES</h3> <p>» आईएसआईएल से निपटने के लिए सभी देशों से इराक की अपील</p> <p>» कोष्टा में शीर्षों के जातीय सक्राण के खिलाफ हड़ताल</p> <p>» आयतुल्लाह नुरी हमेदानी ने मुसलमानों के मध्य एकता पर बल दिया</p> <p>» सीरियाई सेना ने मोर्के नगर पर नियंत्रण कर लिया</p> <p>इराकी सुन्नी मौलाना » दाइश का सुन्नियों से कोई संबंध नहीं है।</p> <p>» अपने अभिभावकों पर घट दोड़े हैं आतंकी,</p>
<p>सांस्कृतिक</p> <p>२) अक्लेबैत (अ.स.)</p> <p>२) शिया समुदाय का परिचय</p> <p>२) टिरप्पी</p> <p>२) सामान्यतर</p> <p>२) रिपोर्ट</p>	<p>» मिश में सउदी अरब के खिलाफ आक्रोश</p> <p>» इसाई के पास २+० से अधिक परमाणु बार हेल्स मौजूद हैं</p> <p>» पेस टीवी की रिपोर्टर की संदिग्ध मौत, तुर्की का हाथ होने की आशंका।</p> <p>» यमन, ताज़ा झड़पों में २० हौसी लड़ाके हलाहत</p> <p>» फस में अमरोका को दिखावा आईना।</p>

ماہنامہ
طوبی

جون ۲۰۱۷ء

(ع)

محبت
ولاد

